4

ISSN 2278-0319

Research Journal for Resurrection in Intellectual Disciplines

International Registered and Recognized
Research Journal in Higher Education for all Subjects

Chief Editor
Dr. Khanderavaji S. Kale

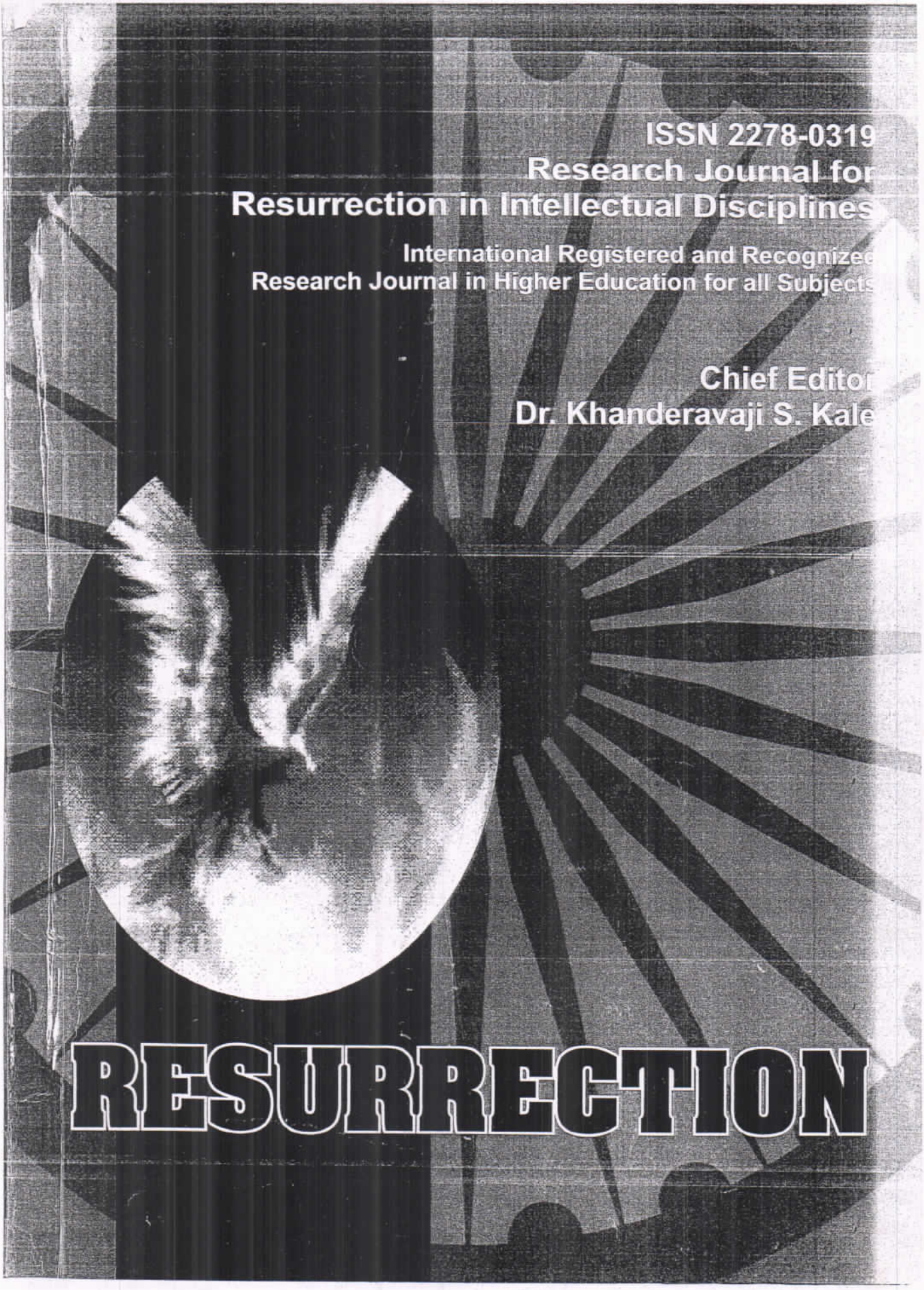

CONTENTS

1. Vivek S. Shinde
A Study on the Impact of Job Stress on Labour Turnover of the Private Life Insurance Sector with reference to Kolhapur District.

7. Vidya Avachat.
Role of NGOs activity in creating awareness regarding environmental

13. Dr. Ranjit Baburao Pawar
Geo-Economical Study of Self- Help Groups in Kolhapur District

18. Zahid Y. Shaikh
The Status of Wildlife Tourism in Goa – a Tourist's Perspective

24. Shital Dhanpal Gare
A Study On Emotional Intelligence With Reference To The Employees Of Zanvar Group"

30. Dr. Pratap Bapuso Lad
Progree and Problems of Agricultural Marketing in India"

36. Zahid Y. Shaikh
The Role of Service Provider towards Wildlife tourism in Goa State

41. Mr. Bure Suryanarayana & Mr. P. Nareshkumar
Enhancing the Quality and Efficiency in Teaching and Learning through ICT

47. Mali D. S.
Energy and By-product Recovery in the Sugar-Distillery Complex

53. Patel SayyadImran S. & Dr. Sunil D Chavan
Coach the Important Factor in 'Cricket Game'

58. Dr. B. S. Navi
A Study On Credit Rating Agencies-Its Challenges And Recommendations With Reference To Msmes

64. Dr. S. N. Waghamare, & Smt. Kalpana I. Pattan,
Environmental Pollution In India

71. Smt. Kalpana I. Pattan & Dr. S.N. Waghamare,
Development Of Women Higher Education In India

77. Vimala Sangolli
Yapaniya Sangha With Special Reference To The Northern Karnataka

80. Mrs Swapna M .Mahindrakar
Enhancing To Every Citizen Right To Work Through The Natural Rural Employment Guarantee Act

86. प्रा. डॉ. के. एस. काळे
सुरतेचा खजिना लुटला

88. प्रा. डॉ. एस. के. खोत
मीडिया में नयापन

90. प्रा. दिपक पाटील
'ग्रामसभा कामकाजः सकारात्मक निर्णय'

Page No-88 to 89
Research Paper-*Hindi*
Research Journal for
Resurrection in Intellectual Disciplines
ISSN 2278-0319,Val-6, Issue-1, Aug.,-2013

मीडिया में नयापन

प्रा. डॉ. एस. के. स्वोत
अध्यक्ष,हिंदी विभाग,
चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापूर.

आजादी के पूर्व पत्रकारिता विचारों से लबालब भरी थी । स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय एकता को बरकरार रखने का कार्य पत्रकारिता ने किया है । स्वाधीनता संग्राम को बढ़ावा देकर आजादी प्राप्त करने के लिए पत्रकारिता का योगदान सराहनीय है । समाज में व्याप्त प्रथा – परंपराओं पर तीखा प्रहार करने का प्रयास पत्रकारिता का स्त्युत्य उपक्रम है । मिशनरी भाव लेकर जन्मी पत्रकारिता में आज के काल में नयापन महसूस हो रहा यह मात्र निश्चित है । यह नयापन अच्छाईयों और बुराईयों का है । यह सच है कि पत्रकारिता का रास्ता आदर्शों का रहा, लेकिन आज बाजारू प्रवृत्ति उसमें आई है, यह नकारा नहीं जा सकता है । यह वास्तव है कि जिस गति से पत्रकारिता का विस्तार हुआ उस गति से उसमें बदलाव भी आया है

एक काल में ज्ञान मुट्ठी भर व्यक्तियों की संपत्ती बनाकर रखा जाता था, किंतु आज की पत्रकारिता ने बड़ी दृढता तथा सफलता के साथ समाज तक पहुँचने का प्रयास किया है । गौरव कि बात है धर्मचिकित्सा करने का कार्य पत्रकारिता ने बहस के जरिये किया है । साथ ही साथ मानव जीवन के सभी पक्षों की चर्चा का आरंभ भी हुआ है । सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना यह पत्रकारिता का दायित्व है, लेकिन आज मत तथा निर्णय देने की भूमिका भी पत्रकारिता में आई है ।

दुर्भाग्य से कम्पनी मैनेजर की तरह अखबार के संपादक बनते जा रहे है । समाचार पत्र के या पत्रिका के संपादक की बदलती भूमिका स्पष्ट देखने को मिलती है । संपादक की बदलती भूमिका स्पष्ट देखने को मिलती है । संपादक की भूमिका आज संशय के घेरे में अटकी है । समाचार पत्र में अधिकांश रूप में राजनीति पसंद का विषय बना है । उसके मायने में ग्रामीण पिछड़े लोगों के विकास की बातों की चर्चा कम देखने को मिलती है । पहले–पहले संपादक के नाम या विषय पर तथा नीति पर पत्र बिकता था, आज ऐसी कोई बात नहीं रह गई है । विज्ञापन के नाम पर कमाने की भूमिका नए सिरे से आ रही है ।

आज पाठकों की पसंदी को महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है । परिणाम स्वरूप चकाचौंध दुनिया दिखाने की होड़ लगी है । आदर्शों की महत्ती या विचार के सिवा सनसनी फैलाने में रूचि बढ रही है । इससे गंभीर समझी जानेवाली सामग्री से हटने की नौबत आती है । निष्पक्षता, तटस्थता के साथ समाचार देने के बारे में निश्चित सवाल खड़े किए जा सकत हैं । ब्रेकिंग न्यूज ने हद तोड दी है । स्टींग ऑपरेशन नेताओं तथा साधुसंतो के अश्लील कारनामों की वीडियों क्लिपिंग सार्वजनिक रूप से प्रसारित किया जा रहा है ।धर्म की नाम पर अधर्म करनेवाले साथ ही साथ सभ्य और देशभक्ति का मुखौटा पहनकर असभ्य गद्दारों का असली चेहरा बाहर आ रहा है, किंतु इसमें चिंता की बात है कि, दूसरे दिन में वही खबर गायब होती है । भंडाफोड पत्रकारिता में महिलाओं का प्रयोग किया जा रहा

है ।

आज समाज पत्रकारिता को महत्वपूर्ण स्थान दे रहा है, क्योंकि उनके आसपास का वास्तव चित्र उसमें होता है और एक बात पत्रकारिता में आज स्पष्ट देखने को मिल रही है कि ये पत्र पत्रिकाएँ अपने मालिकों के हितों की रक्षा कर रही हैं । हमें यह मानना ही होगा कि दुनिया में बदलाव हुए हैं और आर्थिक उदारीकरण तथा भूमंडलीकरण के दौर में संवेदनशीलता को बडा धक्का लगा है । खबरों में चटपटापन आ रहा है । अनेक घोटाले सामने भी लाने का प्रयास पत्रों का रहा है । लोगों का स्वाद बदलने के कारण कई बुराइयाँ भी आ रही है ।

जागरूकता तथा समझ पैदा करने में बहुत सशक्त माध्यम पत्रकारिता है । निरक्षरता समाप्त करने हेतु तथा स्वास्थ्य अच्छा रखने में पत्रकारिता का कार्य महत्वपूर्ण है । ''पत्रकारिता के बदलते परिप्रेक्ष्य में ऐसा भी नहीं है कि पत्रकारों के लिए पत्रकारिता आज आकर्षण का व्यवसाय नहीं रहा । न ही ऐसा है कि पत्रकार पत्रकारिता के प्रति अब उदासीन रवैया अपना रहे हैं । आज भी पत्रकार पत्रकारिता को एक सम्मोहक व्यवसाय मानते है और इस व्यवसाय से जुड़े खतरों का हँसी-खुशी से सामना कर रहे हैं । यदा कदा कई कर्तव्यनिष्ठ पत्रकारों ने स्वतंत्रता के बाद भी पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत रहते हुए जीवन का उत्सर्ग किया है । ताकि सत्य की प्रतिष्ठा बनी रह सके । पत्रकार उन घटनाओं का भी सजीव वर्णन कर रहे है, जो समय समय पर घटती रहती है ।[1]'' स्पष्ट है कि पत्रकारिता एक आकर्षण का विषय है, जिसमें अधिकांश मात्रा में आदर्श की बातें है । उसी तरह कई पत्रकारों के द्वारा मिशन का भाव समाप्त होने जा रहा है । यह समाज के स्वास्थ के लिए भी खतरा है । समाचार पत्र का वह रूप नहीं रहा, जो शुरू में हुआ करता था । समाचार पत्र के समाचार याने सत्य की बातें मानी जाती थीं । संप्रति समाचार पत्र अतिरंजन की ओर जा रहे हैं । ''स्वतंत्रता के उपरांत कई बडे संस्थानों के मालिकों और संपादकों के मध्य इतना गहरा निजी रिश्ता रहा कि वे जाने अनजाने प्रबंधन के हितों की रक्षा करने में हमेशा तत्पर दिखे । उनमें ऐसे संपादक और मालिक सम्मिलित थे, जो प्रेस की स्वतंत्रता के कर्णधार माने जाते रहें । व्यक्तिगत संबंध व्यावसायिक हितों हेतु उपयोगी माने जा सकते थे, लेकिन समय ने करवट ली अब व्यावसायिक हितों हेतु मालिकों के माध्यम से संपादकों का उपयोग किया जाने लगा ।''[2]संप्रति ऐसा देखने को मिलता है कि बुजुर्ग संपादक, पत्रकार के अलावा बोलने में माहिर, सुंदर, सुडौल युवक युवति को जानबुझकर महत्व दिया जा रहा है । आज माध्यमों में बढोत्तरी हुई है, उसमें नयापन भी आया है । रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए हैं । रविवारीय पृष्ठों पर राजनीति तथा काल्पनिकता हावी दिखाई देती है । रूचि और पैसा कमाने हेतु भ्रष्ट एवं गंदी बातें पत्रकारिता में नहीं आनी चाहिए । पत्रकार और संपादक एक पेशा है, ऐसा समझकर कार्य करने की जरूरत है ।हमें ऐसे पत्र का गौरव है जो निर्धन होते हुए भी अपने रास्ते से बिल्कुल हटने का नाम नहीं लेते । अखबार पत्रों की ताजगी भी अपना महत्व रखती है । शीर्षक भी आकर्षक ढंग से आज दिए जाते हैं ।

संप्रति इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के तेवर भी बदले हैं । जिन कारणों से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की शुरूआत हुई थी, वह अब कोसों पीछे चली गई हैं । अश्लीलता को कलात्मक कहने की परंपरा शुरू हुई है । शराब के नशे में गीत, संगीत बज रहा है । सिनेमा की चकाचौंध में मनुष्य भविष्य को नष्ट कर रहा है । महिला थिरकती हुई नजर आ रही है । सामाजिक सरोकार या संवेदनशीलता लुप्त हो रही है । मीडिया अपने लक्ष्य से हट रहा है, ऐसा बार-बार देखने को मिलता है । इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कई दृश्य ऐसे दिखाने का कार्य कर ही है, जो परिवार समेत बैठकर देखना भी गलत लगता है । मीडिया की साहसी भावना सीमित हो गई है ।

हम ऐसे माध्यमों की अपेक्षा करते हैं कि जिससे देश का विकास हो, नैतिकता का विकास हो, परिश्रम लेने की भावना में बढोत्तरी हो, मानवतावाद फले, फुले, राष्ट्रवाद बढे, भ्रष्टाचार, अनाचार तथा दुराचार को ठेस लगे । मनुष्य जीवन के सभी पक्षों का चित्रण यथार्थपरक हो । भारतीय संस्कृति के अनुरूप गीत हो । मीडिया के द्वारा मनुष्य जीवन के स्तर में सुधार हो, मनुष्य समझदार बने, भारतीय संस्कृति मजबूत हो, आपसी संबंध में दरार पैदा न हो । स्पष्ट है कि मूल्यों को बढ़ावा मिले ।

संदर्भ

1. पत्रकारिता एवं जनसंचार, डॉ. ठपाकुरदत्त शर्मा 'आलोक', पृ. 195
2. पत्रकारिता समस्या और समाधान, डॉ. यू.सी. गुप्ता, पृ. 167

TRUE COPY
Principal
Chandrabai-Shantappa Shendure College
Hupari